1857 के संघर्ष में इलाहाबाद के परगना चायल की भूमिका : मौलवी लियाकत अली के विशेष संदर्भ में

डॉ० यूसुफा नफ़ीस रीडर,
मध्यकालीन इतिहास
हमीदिया गर्ल्स डिग्री कालेज

भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के आरम्भिक चरण से ही इलाहाबाद ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आकर्षण का केन्द्र था। बक्सर के युद्ध के बाद इलाहाबाद की निर्णायक सन्धि से इलाहाबाद में कम्पनी का वर्चस्व बढ़ने लगा। 1765 में अंग्रेजों ने इलाहाबाद के किले में ळंततपेंद बनाया था बाद में वारेन हेस्टिंग्ज ने इलाहाबाद को अवध के नवाब को दे दिया। अवध के नवाब सआदत अली और गर्वनर जनरल सर जॉन शोर के बीच 2 फरवरी 1798 को हुई सन्धि के द्वारा इलाहाबाद का किला सभी भवनो और साजो सामान के साथ कम्पनी के अनन्य अधिकार में सौंप दिया गया था। 1801 में अवध के नवाब ने उसे कम्पनी को दे दिया जिससे इलाहाबाद सैनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। 1834 ई० में इलाहाबाद को पश्चिमोत्तर प्रान्त की राजधानी बना दिया। गंगा और यमुना के संगम पर स्थित होने और प्रचुर मात्रा में हथियारों और गोली बारूद की व्यवस्था के कारण इलाहाबाद की स्थिति सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो गयी। मई 1857 में इलाहाबाद का किला पूर्ण रूप से भारतीय सैनिको (पैदल सेना और तोपखाना) की सुरक्षा में था।

मई 1857 मेरठ में प्रज्वलित होने वाली स्वतंत्रता संघर्ष की चिन्गारी सम्पूर्ण उत्तर भारत में ज्वाला के समान धधक उठी। उत्तर भारत में द्वाबा क्षेत्र विशेषकर इलाहाबाद में भी कम्पनी की आर्थिक नीतियों तथा शोषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया हई जिसे महगाँव के मौलवी लियाकत अली ने नेतृत्व प्रदान किया। प्रस्तुत शोधपत्र में इलाहाबाद के प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष में विशेष रूप से मौलवी लियाकत अली के नेतत्व और इलाहाबाद के सभी नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों विशेष रूप से परगना चायल की विशिष्ट भूमिका का पुनरावलोकन करने का प्रयास किया गया है।

मौलवी लियाकत अली के प्रारम्भिक जीवन की जानकारी लिखित रूप से अधिक नहीं प्राप्त होती लेकिन उनके जीवन के विषय में उनके पैतृक गाँव महगाँव में उनके सम्बन्धियों से प्राप्त होती है। इलाहाबाद से 25 किमी. दूर पश्चिम में स्थित परगना चायल के ग्रान्ट ट्रंक रोड पर स्थित महगाँव नाम गाँव में मौलवी लियाकत अली का जन्म 1817 से 1826 के मध्य हुआ (उनकी जन्म तिथि के विषय में कोई लिखित रिकार्ड नहीं मिल पाता)। कुछ विवरणो में उनको जुलाहा जाति से सम्बन्धित बताया गया किन्तु वास्तव में वह सैय्यद परिवार से सम्बन्धित थे। उनके पिता सैय्यद मेहर अली मध्यमवर्गीय जमीदार थे। प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव में प्राप्त की इसके अतिरिक्त उन्हें अपने चाचा सैय्यद दायम अली का भी संरक्षण प्राप्त था जोकि झांसी में अंग्रेजी सेना में तैनात थे। मौलवी लियाकत अली अरबी, फारसी और उर्दू के प्रकान्ड विद्धान थे इसके अतिरिक्त तलवारबाजी और घुड़सवारी में भी दक्षता प्राप्त थी। उन्हें अंग्रेजी सेना में भर्ती होने का अवसर प्रदान हुआ किन्तु भारतीय सैनिकों के साथ भेदभावपूर्ण नीति उन्हें असहनीय लगी और वे ब्रिटिश सेवा छोड़कर अपने गाँव वापस आ गये और वहाँ पर मकतब पढ़ाकर जीविकोपार्जन करने लगे। मौलवी लियाकत अली पर समकालीन उलमा का प्रभाव था उनकी गाँव और उसकी आसपास अत्यधिक प्रतिष्ठा थी वे कादिरया सम्प्रदाय से प्रभावित थे।[1]

जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी की प्रशासनिक नीतियों दमनकारी भूराजस्व नीति और सांस्कृतिक एवं धार्मिक दबाव के विरुद्ध भारतीयों में प्रतिक्रिया प्रारम्भ हुई तो मौलवी लियाकत अली भी नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई, मौलवी अहमद उल्ला शाह तथा अज़ीम उल्ला के समान विद्रोह की पूर्व योजना में सम्मिलित थे।[2] उन्होंने अपनी घोषणाओं के द्वारा धर्म बचाने की अपील की। उनके द्वारा जारी किया गया पहला इश्तिहार मौलवी खुर्रम अली बिल्हौरी की 'रिसाल–ए–जिहादिया' (1856) में सम्मिलित 57 में से 27 अशार पर

आधारित है जिसके माध्यम से उन्होनें इलाहाबाद के निवासियों को अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्षरत होने की अपील की।[3]

दूसरा इश्तिहार एलाने जेहाद मौलवी लियाकत अली इलाहाबादी (सानी) के द्वारा अंग्रेज़ों के शासन के प्रतिरोध में एकजुट होने की अपील की।[4] उन्होने आहवान किया कि 'मुनासिब है कि जो भाई मुसलमान इस खबर वहशत असर को सुने वो मौरन मुस्तैद होकर कमर हिम्मत जेहाद बाँधे और ता शहर इलाहाबाद तशरीफ लावें और किलेबन्द कुफ्फार नाबकार को कला कमा करके बज़ोर तेग बेदरीग अपनी के खाक में मिलादें और इस मुल्क से भगा दे।

21 अगस्त 1957 को प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष की शताब्दी के अवसर पर National Archives of India द्वारा एकत्रित किये गये 40 documents मे से 7वां document मौलवी लियाकत के द्वारा जेहाद की अपील से सम्बन्धित है।[5]

मेरठ, दिल्ली, ग्वालियर, लखनऊ, झांसी और बनारस में अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष के समाचार इलाहाबाद भी पहुंचे। सेना और नगर में व्याप्त उत्तेजना से ब्रिटिश अधिकारियों को चिन्ता हुई इस लिए उन्होने खज़ाने और कारागार की रक्षा के लिए और दारागंज से शहर तक की सड़कों पर गश्त लगाने के लिए थर्ड अवध इर्रेगुलर्स सेना की दो टुकड़िया प्रातापगढ़ से इलाहाबाद भेजी गयी। 5 जून को ये रिपोर्ट मिली कि स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी इलाहाबाद की ओर बढ़ रहे है और कानपुर के कामडिंग आफीसर से इस आशय का एक मिलिट्री संदेश भी प्राप्त हुआ कि ''किले की सुरक्षा के लिए प्रत्येक उपलब्ध योरोपियन की सेवा ली जाये और डट कर मुकाबला किया जाये। दो तोपो और भारतीय पैदल सेना के दो टुकड़ियों को किले के निकट दारागंज में यमुदा नदी के ऊपर बनाये गये नौका पुल की रक्षा के लिए और वाराणसी से आने वाले राजद्रोहियों के आक्रमण का सामना करने के लिए भेज दिया गया। घुड़सवार सेना की दो टुकड़ियों को अलोपीबाग में तैनात किया गया जिन्होंने नगर को जाने वाले सभी मार्गों को अपने नियंत्रण में ले लिया।[6]

इतनी तैयारियों के पश्चात भी 6 जून, 1857 को इलाहाबाद में प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष का प्रारम्भ किले में 6ठी देशी पलटन के द्वारा हुआ इसका समाचार शहर पहुंचा और क्रान्तिकारियों ने सक्रिय होकर दारागंज पर अधिकार कर लिया।[7]

पूर्व योजनानुसार 7 जून को मौलवी लियाकत अली भी महगाँव से इलाहाबाद पहुचे और उन्होंने खुसरो बाग को केन्द्र बनाया जिसमें क्रान्तिकारी और सेना से निकाले हुए सैनिक एकत्रित हुए।[8] खुसरो बाग़ में दरबार लगाया गया जिसमें क्रान्तिकारियों ने बहादुरशाह के लिये 101 तोपों की सलामी दी और मौलवी लियाकत अली के लिए 21 तोपों की सलामी दी और उनके नेतृत्व की घोषणा की गयी समदाबाद और रसूलपुर के नेवाती पठानों ने शेर खाँ के नेतृत्व में मौलवी लियाकत अली के साथ सम्मिलित हो गये। जेल का फाटक तोड़कर 3 हज़ार कैदियों को आज़ाद कर दिया।[9]

लेफ्टिनेन्ट एलेक्जेन्डर तथा अनेक अंग्रेज़ आफिसरों को मार डाला गया। अनेक ब्रिटिश आफिसरों को अपने परिवारों के साथ इलाहाबाद छोड़ने के लिए बाध्य किया रेलवे लाइन और टेलीग्राफ की लाइनें ध्वस्त कर दी।[10] सम्भवतः 22 लाख रुपयों का खज़ाना लूट लिया गया।

इस प्रकार लियाक़त अली इलाहाबाद के क्रान्तिकारियों के मुखिया बन गये उनके सहयोगियों में परगना चायल और कई निकटवर्ती गाँव शामिल थे।

1. समदाबाद और रसूलपुर के नेवाती
2. महगाँव
3. कोइलहा
4. सराय सलीम (सुलेम सराय)
5. सिओरधा फतेहपुर
6. ब्ररहम्हार
7. चायल खास
8. भीखपुर मेडवान

9.पावन
10. शेखपुर
11. कशिया
12.बड़ा गाँव
13. काठगाँव
14.शाहा उर्फ बेलगांव
15. मेहिउद्दीनपुर
16. बेगम सरायं
17. अमरावती चक
18.श्राजपुर
19. लोहरा, कोरई, अमरछा
20.नजियारा बघाड़ा
21. बेली
22.छीतपुर
23.नीमीबाग, नीवां
24.रसूलपुर डेह
25. मिनहाजपुर
26.रोही
27. गयासुद्दीनपुर
28. कसमदा सराय
29.उमरपुर[11]

यद्यपि मौलवी लियाकत अली चायल के प्रतिष्ठित परिवार से सम्बन्धित थे किन्तु उनके अधिकतर सहयोगी माध्यम वर्गीय कृषक, छोटे ज़मीदार, पट्टीदार, राजपूत, ब्रहम्मण, कुर्मी, चमार, छोटे दुकानदार, सूफी दायरों से सम्बन्धित विभिन्न कस्बों के उल्मा जुलाहे श्रमिक आदि थे। दारागंज से भी मौलवी लियाक़त अली को पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा था उन्हें वहाँ के दशहरा एसोसिऐशन का भी सहयोग प्राप्त हुआ। झूसी का सुखराय ने भी मौलवी लियाकत अली का साथ दिया। फतेहपुर से हिकमत उल्ला ने पठान स्वयं सेवाकों को उनकी सेवा के लिए भेजा। सिंगरौर के ठाकर टेलीग्राफ लाइने ध्वस्त करने में सक्रिय रहे और इन सभी क्रान्तिकारियों ने मिलकर इलाहाबाद, और कानपुर के बीच की ग्रान्ट ट्रंक रोड के आवागमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया।[12]

सराय खुल्दाबाद छावनी में बदल गया, क्रान्तिकारियों ने अपनी फौज को दो भागों में बांट लिया– एक रेजीमेन्ट का नेतत्व मौलवी स्वयं कर रहे थे दूसरे का सरदार रामचन्द्र। सिपाही एक साथ अल्लाहो अकबर और हर हर महादेव के नारे लगा रहे थे। मौलवी लियाकत अली ने प्रतिदिन कोतवाल, तहसीलदार थानेदार और अन्य अधिकारियों की नियुक्तियां करनी प्रारम्भ कर दीं। सैउफल्ला और सुखराय चायल के तहसीलदार बनाए गये।[13] क़ासिम अली खां और नियामत अशरफ को कोतवाल बनाया बनाया गया। बमरौली के चौधरी शिहाबद्दीन को नायब और करवा के ज़मीदार हादी और फैजुल्ला खान को सेना का अधिकारी बनाया।

ब्रिटिश रिकार्डस से भी मौलवी लियाकत अली की लोकप्रियता और विशेष रूप से उनके परगना चायल के सहयोगियों की पुष्टि होती है। उदाहरण के लिए

Liaqat Ali assumed the leadership of inhabitants of Allahabad and strove to established the new order of which emperor Bahadur Shah was the champion(Foreign, 31 December, 1858, NO 1152)[14]

इसी प्रकार कर्नल नील ने इलाहाबाद आने पर जो पत्र व्यवहार किये, और तत्कालीन स्थिति का विवरण दिया उन पत्रों से भी मौलवी लियाकत अली के नेतृत्व पर प्रकाश पड़ता है। वह अपने एक पत्र में लिखता है

"I found this fort almost completely invested the bridge of boats over the Ganga in the hands of the meb in the village of Daraganj-------The destruction of property has been very great-[12]

फर्स्ट मद्रास रायल फ्यूजिलियर्स के अधिकारी विलियम टैब ग्रूम ने 14 जून 1857 को अपनी पत्नी को लिखे गये एक पत्र में लिखा

"We are surrounded here by sepoys, Musalman, villagers and in fact all mankind. Food very short and our men are dying in as awful way from overwork and exposure. The enemies are in a very strong position in a place called "The Kings garden' three miles off nearly."[13]

H.D.P.B. Villock ने Narrative of Events in Allahabad in the Magistrate of Shahjahanpur में लिखा कि मौलवी जो कि पेशे से अध्यापक हैं वह अपने आदर्श जीवन के कारण गाँव में प्रतिष्ठा की

स्थिति पा चुके हैं। जैसे विद्रोह शुरू हुआ चायल परगना के ज़मीदार परिवारों ने उसे अपना नेता मान लिया, उन्होंने शहर पर आक्रमण कर दिया और उसे बहादुरशाह ज़फर के नाम पर इलाहाबाद का सूबेदार घोषित किया।[14]

अंग्रेजी साक्ष्यों से ही ज्ञात होता है कि पूरा जिला, सदर और मुफस्सिल क्रान्तिकारियों ने अधिकृत कर लिया था। इससे चिन्तित होकर अंग्रेजी सेना सक्रिय हो गयी। 11 जून 1857 को जनरल नील आया तो उसने सिक्ख रेजीमेन्ट का साथ लेकर इलाहाबाद के किले पर आक्रमण कर दिया। मौलवी लियाकत अली अपने सहयोगियों के साथ वीरतापूर्वक लड़े उनसे आत्मसमर्पण करवाने के प्रयास किये गये किन्तु क्रान्तिकारियों ने हार नहीं मानी लेकिन प्रशिक्षित सैनिकों की और रसद की कमी और हिन्दु मुसलमान सहयोगियों के ही समान कुछ विरोधियों के कारण अन्ततः इलाहाबाद पुनः अंग्रेजों के आधिपत्य में आ गया।

- अंग्रेजी सेना ने पहले दारागंज पर अधिकार किया।
- 13 जून को झूसी पर अधिकार किया गया।
- 14 जून को मेजर हैरिस ने यमुना नदी के किनारे के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- जून को किले की चहारदीवारी पर तोपखाना लगाकर कीटगंज और मुट्ठीगंज पर गोलाबारी की गयी।

  लेफ्टिनेन्ट बेली और अंग्रेजों फौज और क्रान्तिकारियों के बीच संघर्ष हुआ (वर्तमान क्रास्थवेट गर्ल्स इंटरकालेज के पास)।

- फिर चौक का क्षेत्र छीन लिया गया 15 जून को ही दरियाबाद और सादियाबाद पर आक्रमण किया।
- 15 जन को जनरल नील अपनी सेना के साथ खसरो बाग़ के समीप आया उसके साथ भारी तोपखाना था दिन भर की लड़ाई के बाद मौलवी लियाकत अली असफल होते देखकर नाना साहब से सहायता लेने हेतु कानपुर चले गये।[15]

सुन्दर लाल के अनसार– ''अगर किले में सिक्ख मुजाहिदों का साथ देते तो आधे घंटे के अन्दर किला और उसके अन्दर का सारा सामान मुजाहिदों के हाथ में आ जाता लेकिन ठीक मुसीबत के वक्त सिक्खों ने अंग्रेजों का साथ दिया अंग्रेजी झण्डा इलाहाबाद के किले पर लहराता रहा।[16]

क्रान्तिकारियों को बन्दी बना लिया गया गाँव जला दिये गये और लोगों को फाँसियां दे दी गयी। सर जान कैम्बल और सन जान रसेल आदि ने भी अंग्रेजों के अत्याचारों की पुष्टि की है। सुन्दर लाल ने अंग्रेजों के विवरणों के आधार पर लिखा–

'नील के सिपाही एक–एक गांव में घुसते थे। जितने भी आदमी रास्ते में मिलते उन्हें वह बिना किसी कारण के तलवार के घाट उतार देते थे या गोली से उड़ा देते थे। या फांसी पर लटका देते थे। जगह–जगह फांसी के तख्ते खड़े किये गये, जिन पर चौबीस–चौबीस घंटे बराबर काम जारी रहता जब उनसे भी काम न चला तो अंग्रेज अफसरों ने पेड़ों की शाखों से फांसी का काम लेना शुरू किया जिस आदमी को फांसी देनी होती थी उसे आमतौर पर हाथी पर बिठाया जाता था। हाथी के किसी ऊँची डाल के पास ले जाया जाता था। उस आदमी की गरदन डाल के साथ बांध दी जाती थी। फिर हाथी को हटा लिया जाता और लटकती हुई लाश को उसी जगह छोड़ दिया जाता था।[17]

भोला नाथ चन्द्र ने अपनी किताब 'Travels of Hindu' में इलाहाबाद की स्थिति के विषय में लिखा– करीब 6 हज़ार लोगों को कत्ल किया गया, पेड़ों की हर डाल पर दो तीन लाशें लटकी हुई थी। तीन महीने तक सुबह से शाम तक बैलगाड़ियों पेड़ों और खम्भों से लाशें उतार कर ले जाती और गंगा में बहा आतीं।[18]

कन्हैया लाल भी यह विवरण देते हैं कि ''जब मुफ़्सदीन तिश्नएखून इस तरह खूब सज़ायाब हो चुके तो एक कमीशन मुकर्रर हुआ जिसमें बल्वा परदाज़ान की तहक़ीक़ात होनी शुरू हुई और जो लोग संगीन और गोली से बच गये थे उनको जल्लादों की लकड़ी और रस्सी से सजा मिली आगे उनको तहक़ीक़ात और सुबूते जुर्म फांसी दी गयी अब इलाहाबाद नमूना वीरानाबाद का हो गया, जिस मुकाम पर मकानात खुशकता और बागीचा लगे खुशउसलूब थे अब वहाँ दीवार हाय आतश दीदा और मकान वीरान गरवीदा नज़र आते हैं।[19]

मेजर रिनॉड ने इलाहाबाद से कानपुर की ओर कूच किया तो जनरल नील ने उसे निर्देश दिये कि जहाँ विद्रोहियों ने शरण ली हो उन गावों को जला दे और विद्रोही सिपाहियों को फाँसी पर चढ़ा दें। मेजर रिनाड द्वारा ग्रान्ट ट्रंक रोट के दोनों ओर बसे गावों पर किये गये अत्याचार अंग्रेज़ों के दमनकारी नीति के साक्ष्य है।

दूसरी ओर ब्रिटिश सेना ने क्रान्तिकारियों के नेता मौलवी लियाकत अली को ढूंठने के अथक प्रसास किये। मजिस्ट्रेट ने मौलवी लियाकत अली पर 5000 का इनाम रखा किन्तु अंग्रेजों के विरुद्ध घृणा इतनी तीव्र थी कि किसी ने भी आदेश नहीं माना। [20]

Foreign Secret Consultations 31 July 1857, No.94 से ज्ञात होता है कि इलाहाबाद रसूलपुर थाने के थानेदार अज़मत उल्ला खान को जो हुकुमनामा दिया गया उसमें भी लियाकत अली बागी को जिन्दा या मुर्दा गिरफ्तार करने का 5 हजार रू. का ऐलान किया गया। इसमें ये भी कहा गया था कि और थानेदार भी इस इश्तेहार को जगह–जगह पर लगाये।[21] जनरल नील ने लिखा कि

"Maulvi has left this with about 3000 followers, his destination is unknown, but supposed to be Lucknow, or in his neighbourhood. I have arranged to beat up his camp if it is."[22]

मौलवी लियाकत अली अंग्रेज़ो से बचते रहे। सम्भवतः वह 10 साल तक गुजरात में लाजपुर में रहे क्योंकि लाजपुर का नवाब अब्दुल करीम खान बुद्धिजीवियों को प्रश्रय प्रदान कर रहा था और उन दिनों गुजरात सूफियों का प्रमुख केन्द्र था इसके पश्चात वह बम्बई गये और वहाँ पर कैद किये गये।[23]

इस सम्बन्ध मे अंग्रेज़ आफिसर पार्सन द्वारा पेशावर के कलेक्टर को लिखा गया मौलवी लियाकत अली से सम्बन्धित पत्र महत्वपूर्ण है। जिससे ज्ञात होता है कि 1866 के आस पास पेशावर भी गये पपत्र का उर्दू अनुवाद मुहम्मद अय्यूब क़ादरी ने किया। जो उनकी किताब ''जंगे आज़ादी 1857 वाक्यातो शख्यिसयात' में भी मौजूद है इसमें लिखा है–

मैं इलाहाबाद के 1857 के बाग़ी लीडर लियाकत अली का फोटोग्राफ भेज रहा हूं। वह इस वक्त जेल में है। वह गदर के बाद से सूबा बम्बई और आज़ाद इलाकों में बगावत फैलाता रहा है उसका ताल्लुक सरहद के मौलवियों या फिरोज़शाह से है। अगर ज़्यादा नहीं तो वह वहां जा चुका है एक बार 1866 में दूसरी बार 1869 में, जब वह बम्बई में गिरफ्तार किया गया तो वह तीसरी बार जा रहा था।

अन्त में लिखते हैं कि– 'आप से मुलाकात हासिल करना चाहता हूं कि आप फोटो के सरहद के लोगों से मशवरा करके शिनाख्त करें.....शायद मुल्ला सैय्यद या उनके साथी इस्माइल या महमूद फोटो शिनाख्त कर सकें। लियाकत अली हमेशा दौराने सफर अपना नाम बदल देता था और सरहद में वह अब्दुल करीम के नाम से मशहूर था।[24]

- बम्बई में मौलवी लियाकत अली को गिरफ्तार करके उन पर मुकदमा चलाया गया इस मुकदमें में उन्होने सहर्ष स्वीकार किया कि –
- वह जून 1857 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी और रानी विक्टोरिया के विरुद्ध विद्रोह के नेता थे।
- उन्होंने मजिस्ट्रेट के समक्ष अपने व्यक्तव्य में कहा कि वे विद्रोहियों को नेतृत्व दे रहे थे लेकिन शहर को लूट से बचाना चाहते थे।
- उन्होने यह स्पष्ट किया कि जब विद्रोहियां के नियन्त्रण में स्थिति आयी तो उन्होने शान्ति और सुव्यवस्था बनाये रखने का पूर्ण प्रयास किया।

- उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि खुल्दाबाद से क्रान्तिकारियों को नेतृत्व दिया।

इस सम्बन्ध में Judgement in the case Govt. vs. Liaquat Ali signed by A.R Pollock, Sessions Judge, dated 24th July 1872. महत्वपूर्ण डाक्यूमेन्ट है। इस फैसले में मौलवी लियाकत अली के भाग्य का निर्णय किया गया। "The prisoner Liaqat Ali having confessed to the charge that he being a person owing allegiance to the British Government was a leader in revolt and rebelled and waged war against the queen and the government of the East India Company in the month of June or there about in the year 1857, at Allahabad, the Court finds that he is a guilty of an offence punishable under Section I Act XI of 1857 and directs the said Liaqat Ali shall be transported for life"(Judgment in the case government vs. Liaqat Ali; papers taken out from a bundle of papers belonging to a file relating to Niaz Mohammed,1872 Badaun Collectorate Mutiny Basta.) इस निर्णय के पश्चात मौलवी लियाकत अली आजीवन अण्डमान (काला पानी) में रहे। उनकी जायदाद जब्त कर ली गयी और उन्होंने अण्डमान में ही 1892 में ही देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना जीवन दे दिया।

सन्दर्भ

1. मौलवी लियाकत अली के प्रपौत्र महंगांव निवासी श्री काज़ी मोहम्मद नसीम से उनके जीवन के विषय में जानकारी मिली इसके अतिरिक्त विशद विवरण हेतु– महंगांव के श्री अब्दुल बारी का लेख– अलजमीअत, 2 सितम्बर 1958 पृ० सं० 3-5, खुर्शीद मुस्तफा रिज़वी– जंगे आज़ादी– 1857, दिल्ली पृ० 336-337 2.
2. शहाबी, इन्तेजामुल्ला, ईस्ट इण्डिया कम्पनी और बाग़ी उलेमा पृ० 48, गदर के चन्द उलेमा पृ० 91-92 इनायत हुसैन खान, सरगुजिश्त अय्यामें गदर 1936 अन्नाजिर प्रेस लखनऊ।
3- 3-4 Lal Kanhaiya & Tarikhe&Baghwante Hindi p- 300-301, इश्तिहार अव्वल मन्जूम, इश्तिहार सानी– 301-304
4. Husain, S- Mehdi "Bahadurshah Zafar and the war of 1857" in Delhi, Preface by Prof- Muslime Hasan, p- XII, Abrar Book Publishers, 2006-
5. एस. ए. ए. रिजवी द्वारा सम्पादित, फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश खण्ड पृ० 540-542 सुरेन्द्र नाथ सैन, 1857 पृ० 5
6. तदैव
7. इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृ० 35-37,Halmes T-R- History of Indian p-217मौलवी मकबूल अहमद– तारीख–ए–इलाहाबाद 1357 हिजरी, भाग–1, स्टार प्रेस, इलाहाबाद पृ० 31-32

   तरीखे बगावते हिन्द 1857 पृ० 296,98

8. स० ए० ए० रिजवी – Freedom Struggle in Uttar Pradesh Soureh Material Vol- IV 1959, U.P. Board for the History of Indian Movement p-550
9. उपाध्याय, विश्वामित्र– 57 के भूले बिसरे शहीद भाग–2 पब्लिकेशन डिवीजन पृ० 6
10. स० ए० ए० रिज़वी– Freedom Struggle in Uttar Pradesh Soureh Material Vol- IV1959, U.P. Board for the History of Indian Movement p-550
11. मिश्रा अमरेश War of Civilizaion the long revoluition India AD 1857 Vol 1 P-291-298
12. सैफल्ला और सुखराय दोनों को अंग्रेज़ों ने फांसी दे दी थी। लियाकत अली फाइल म्युटिनी बस्ता नं० 5 (16)
13. लाल, सुन्दर भारत में अंग्रेजी राज' भाग–2, पब्लिकेशन डिवीजन पृ० 329
14. लाल, सुन्दर भारत में अंग्रेजी राज भाग–2, पब्लिकेशन्स डिवीजन पृ० 329
15. उपाध्याय विश्वामित्र– 1857 के भूले बिसरे शहीद भाग–2,पब्लिकेशन डिवीजन पृ० 7
16. कादरी मुहम्मद अय्यूब, जंगे आज़ादी 1857 वाक्यातों शख्सियात, पाक एकेडेमी, कराची पृ० 493-494